(1)

Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce

Lecture :- 95

Sub :- Financial Accounting (Hons)
Paper :- 1st
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA

B.Com Part 1st

* Introduction

** Difference Between Indian and English System Ledger Account *

भारतीय एवं अंग्रेजी दोनों बहीखाता पद्धतियां दोहरे लेखे के वैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित हैं। दोनों में ही व्यक्तिगत और अव्यक्तिगत खाते रखे जाते हैं और तलपट बनाकर खातों की शुद्धता को जांचा जाता है। इसके अतिरिक्त सौदे का लेखा दोनों ही पद्धतियों के अन्तर्गत तीन अवस्थाओं में किया जाता है अर्थात् पहले उनको सहायक पुस्तकों में लिखा जाता है और फिर प्रधान पुस्तक में (खाताबही में) तथा अन्त में अन्तिम खाते बनाए जाते हैं।

भारतीय एवं अंग्रेजी पद्धति में अंतर

अंतर का आधार	अंग्रेजी बहीखाता प्रणाली	भारतीय बही-खाता प्रणाली
1. रजिस्टर एवं बहियां	लेखा करने के लिये रजिस्टर प्रयोग किये जाते हैं।	लेखा करने के लिये बहियां प्रयोग की जाती हैं जो कि एक विशेष प्रकार की होती हैं
2. लाइनें	रजिस्टर लाइनों वाले होते हैं।	बहियां बिना लाइनों की प्रयोग की जाती हैं।
3. खाने एवं मोड़	लेखे करने के लिये खाने बनाए जाते थे	खानों के लिये मोड़ बनाये जाते थे
4. नाम व जमा	बायें पक्ष को नाम (Debit) तथा दाहिने पक्ष को जमा (Credit) कहा जाता था	इसमें उलटा होता है अर्थात् दाहिने पक्ष को नाम (Debit) और बायें पक्ष को जमा (Credit) कहा जाता है।

(2)

5. रकम का खाना	रकम आखिरी खाने में लिखी जाती है	रकम प्रथम खाने में लिखी जाती है जिसे सिरा कहते है।
6. तारीख का स्थान	तारीख पहले खाने में लिखी जाती है	तारीख पृष्ठ के ऊपर लिखी जाती है।
7. एक पृष्ठ में एक तारीख	एक पृष्ठ में कई तारीखों के लेखे किये जाते है।	इसमें एक पृष्ठ में एक ही तारीख का लेखा रहता है।
8. भगवान को याद करना	लेखा शुरू करने से पहले भगवान को याद करने के लिये आदरसूचक कोई भी शब्द नही लिखा जाता है।	लेखा शुरू करने के पहले श्री गणेश जी सदा सहाय, आदि शुभ शब्दों का प्रयोग होता है।
9. योग	खातों का योग एक ही लाइन में किया जाता है	खाते का योग उसी जगह कर दिया जाता है जहाँ लेखे समाप्त हो जाते है।
10. व्यापारिक खाता	व्यापारिक खाता सदैव बनाया जाता है।	अधिकतर व्यापारिक खाता नही बनाया जाता है वरन माल खाता ही व्यापारिक खाते का कार्य करता है।
11. चिट्ठे के पक्ष	इस प्रथा में चिट्ठे के पक्ष खाता के पक्ष के विरुद्ध होते है।	इस पद्धति में सम्पत्ति और दायित्व चिट्ठे में उसी ओर लिखे जाते है जिस ओर खाता बही में लिखे हुए होते है।
12. पूराविवरण	इस प्रणाली में लेखा करते समय पूरा विवरण न लिख कर बीजक नंबर लिख देते है और बीजक अलग से फाइल में रखे जाते है।	इसमें प्रत्येक सौदे का पूरा विवरण लिखते है जिससे बीजक आदि रखने की आवश्यकता नही रहती है।

Date : .....
Page : .....

13. खाता-बही में लेखा	इसमें खाता बही में लेखा करते समय खाते का नाम, तारीख, आदि सभी लिखे जाते हैं।	इसमें जब सहायक बहियों से खाताबही में खताया जाता है तो केवल पन्ना नंबर और तारीख लिखी जाती है।
14. स्याही	बहुधा नीली या लाल स्याही का प्रयोग होता है।	अधिकतर काली स्याही का प्रयोग होता है।
15. भाषा	इसमें केवल English में लिखा जाता है	इसमें भारतीय भाषाओं में से किसी भी भाषा में लिखा जा सकता है। यद्यपि मुड़िया या हिन्दी भाषा का प्रयोग अधिकतर किया जाता है।
16. डेबिट या क्रेडिट का स्थान	इस प्रथा में जर्नल में लेखा करते समय पहले डेबिट फिर बाद में क्रेडिट होने वाले खाते रहते हैं।	इसमें नकल बहियों में लेखा करते समय जमा ऊपर व नीचे लेखा किया जाता है यह आवश्यक नहीं कि नाम या जमा का लेखा पहले हो। क्योंकि जमा नकल बही में नाम का खाता पहले और नाम नकल बही में जमा खाता पहले लिखा जाता है।
17. छोटे खर्च	प्रत्येक छोटे और बड़े खर्च के लिये अलग खाता खोला जाता है।	बहुत से छोटे-छोटे खर्चों के लिये अलग खाते न खोलकर सबके लिये एक खर्च खाता खोल देते हैं।
18. पुरानी बहियों का प्रयोग	इस प्रथा में पुराने रजिस्टरों में बहुत से पन्ने बचते हैं तो उन्हें अगले वर्ष प्रयोग में ले लिया जाता है।	अगले वर्ष प्रयोग में नहीं लाया जाता है वरन् प्रति वर्ष नयी बहियां प्रयोग की जाती हैं।

19. बाकियां एवं योग का स्थान	इस पद्धति का योग तब तक नहीं लिखते जब तक बाकी नहीं लिख ली जाये अर्थात् बाकी रकम पहले फिर योग कर दिया जाता है।	खाते में बाकी निकालने की प्रणाली यह है कि पहले निकालकर लिखते हैं।
20. कैश बुक के मदों की पोस्टिंग	कैश बुक के मदों की खाताबही में जब पोस्टिंग होती है तो कैश बुक के विपरीत पक्षों में लेखा रोकड़ पुस्तक में किया जाता है।	रोकड़ बही से खाताबही में उसी पक्ष में लेखा किया जाता है जिसमें रोकड़ बही में लेखा होता है।
21. नकद एवं उधार	इस प्रणाली में केवल नकद सौदों का ही लेखा रोकड़ पुस्तक में किया जाता है।	इस प्रणाली में रोकड़ बही में नकद एवं उधार दोनों प्रकार के सौदों के लेखे किये जा सकते हैं।
22. कच्ची एवं पक्की रोकड़	इस प्रणाली में केवल एक रोकड़ पुस्तक प्रयोग की जाती है, अतः कच्ची एवं पक्की रोकड़ पुस्तक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है।	इस प्रणाली में कुछ व्यवसायी कच्ची रोकड़ पुस्तक एवं पक्की रोकड़ पुस्तक दोनों का ही प्रयोग करते हैं।

The end

Dr. HONEY SINHA
Assistant Professor
Dept. of Commerce
SNSRKS College, Saharsa